आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/ अंक 2/जून 2024
Received: 24/06/2024; Published: 26/06/2024

कहानी

लॉकडाउन

डॉ. सरला सिंह "स्निग्धा"
संपर्क – 9650407240
दिल्ली

डॉ. सरला सिंह "स्निग्धा", लॉकडाउन ,आखर हिंदी पत्रिका, खंड 4/ अंक 2/जून 2024, (172-175)

रागिनी इलाहाबाद के नैनी में अपने पिता द्वारा दिये गये मकान में अपने परिवार के साथ रहती है। यह मकान करीब 1983 का बना है यहां हालत यह है की धीरे-धीरे सड़कें ऊपर और कमरे नीचे होने लगे हैं, करीब चार फुट नीचे। बहुत ही अजीबोगरीब स्थिति में है ये कमरे । बहुत ही जरूरतमंद लोग इन कमरों को किराए पर लेते हैं।

करीब चार महीने पहले ई रिक्शा पर कुछ सामान लादकर एक आदमी कमरा खोज रहा था। उसके साथ उसकी पत्नी और दो बच्चे भी थे जो बार बार रिक्शे से बाहर झांक रहे थे। शायद उनमें उस घर को देखने की उत्सुकता हो रही होगी जहां उनको रहना था।उन चारों के कपड़ों से ही उनके ग़रीबी का अनुमान लगाया जा सकता था। किसी ने उन्हें बता दिया की उस गली के चौथे मकान में कमरा खाली है।बस वह आदमी पूछते पूछते रागिनी के मकान के सामने जा खड़ा हुआ। रागिनी उस समय गाय को रोटी खिलाने के लिए बाहर निकली हुई थी। उसे देखकर वह आदमी आगे बढ़ा,

"मैडम जी नमस्ते।"

नमस्ते नमस्ते ,कहो क्या बात है? रागिनी ने जवाब दिया।

"मैडम मेरा नाम प्रेम प्रकाश है । हम लोग बहुत परेशान हैं ,सुना है आपके पास एक कमरा खाली है।"

"हां है तो पर पहले देख लो।" वह कमरा लोग कम ही पसन्द करते थे इसलिए रागिनी ने पहले कमरा देख लेने की पेश कश की।

अब ई रिक्शे में से उसकी पत्नी उतर कर नीचे आ गई। रागिनी ने दोनों को ले जाकर नीचे का कमरा दिखाया।

प्रेमप्रकाश ने तुरंत हां कर दिया ।उन्हें तो रहने के लिए एक ठिकाना चाहिए था।

"मैडम इसका किराया भी बता दीजिए।"

"भाई इसका किराया दो हजार है।"रागिनी ने कहा।

"नहीं मैडम मैं अभी नया नया आया हूं।मैं इस कमरे का डेढ़ हजार किराया दूंगा।"प्रेमप्रकाश ने कहा।
रागिनी ने भी हां कर दिया। न के बजाय डेढ़ हजार काफी था।

प्रेम प्रकाश ने तुरंत डेढ़ हजार निकाल कर रागिनी के हाथ में रख दिया । फिर ई रिक्शे से सारा सामान निकाल कर दोनों ने कमरे में रखा।रागिनी ने आदतन पूड़ी सब्जी बनाकर उन लोगों को दिया। दोनों बच्चे बहुत भूखे थे तुरंत खाने पर
टूट पड़े।

बातों ही बातों में पता चला कि इनको लखनऊ से एक ठेकेदार लेकर आया है। वह उसे ट्रांसफार्मर का काम कराने के लिए लाया था। ठेकेदार ने दस दिन के लिए उसको दो हजार रुपए एडवांस भी दिया था।

प्रेम प्रकाश की पत्नी का नाम मधू था।मधू बहुत ही मिलनसार नजर आयी। उनके दोनों बच्चे भी बहुत चंचल और सुन्दर थे।उनका नाम था कान्हा और विनय । वे अभी बहुत छोटे-छोटे थे बड़ा चार साल का और छोटा तीन साल का। दस दिन बाद होली का त्योहार पड़ा और होली के बाद कुल चार दिन ही काम चला था कि तभी कोरोना महामारी फैलने के कारण लाकडाउन हो गया। अब प्रेम प्रकाश बुरी तरह से फंस गया। उसके पास में जो थोड़े से पैसे थे वह भी खत्म होने लगा था।

पराया शहर, पराये लोग सभी अपरिचित प्रेम प्रकाश जब ठेकेदार को फोन लगाता तो वह बिना काम के पैसा देने से साफ मना कर देता । फिर धीरे धीरे उसने फोन उठाना भी बन्द कर दिया। लाकडाउन, हाथ में पैसा नहीं,अब वे करें तो क्या करें। सामने के दुकानदार के पास गया,"भैया घर के लिए खाने-पीने का कुछ सामान चाहिए,जैसे ही लाकडाउन खुलेगा मेरा काम चालू होगा मैं तुम्हारे पैसे दे दूंगा।"

"अरे नहीं भैया, मुझे तो माफ़ करना। मैं कभी किराएदारों को उधार नहीं देता हूं।" दुकानदार ने टके सा जवाब दे दिया।

"मेरा विश्वास करो भैया, तुम्हारा पैसा कहीं नहीं जायेगा।" प्रेमप्रकाश लगभग गिड़गिड़ाते हुए बोला।

"नहीं जी कल तुम चले जाओगे तो मैं तुमको कहां कहां तलाशूंगा।" दुकानवाले ने झिड़कते हुए कहा।
प्रेमप्रकाश सिर लटकाए वापस घर में चला गया।

रागिनी अपने कमरे की खिड़की में बैठी हुई गली में दुकानदार से हो रहे इस बातचीत को ध्यान से सुन रही थी। थोड़ी देर बाद वह नीचे आयी तो देखा बच्चे भूख से रो रहे थे और मधू बच्चों को शांत करा रही थी। प्रेम प्रकाश अपने ठेकेदार से गिड़गिड़ा रहा था मगर ठेकेदार बिना काम के एक धेला भी देने को तैयार नहीं था।

रागिनी चुपचाप ऊपर कमरे में गई और पांच किलो दाल और चावल लाकर मधू को दे दिया।

"लो पहले तो बनाओ खाओ, अपने बच्चों को खिलाओ फिर कुछ और करो।"

"अरे भाभी जी बहुत बहुत आभार आपका, जल्दी ही मेरा पैसा आने वाला है। फिर सब कुछ ठीक हो जाएगा।" मधू ने कहा।

वे लोग रागिनी के इस सहृदयता पर चकित थे। एक वह दुकान वाला जो उधार तक देने के लिए नहीं तैयार हुआ। एक रागिनी जो इतना सारा अनाज लाकर दे गयीं।

रागिनी एक धार्मिक स्वभाव की महिला थीं रोज दो मुट्ठी चावल चिड़ियों के लिए छत पर डाला करती थी। उनके यहां खेतीबारी होती थी तो चावल, दाल ,गेहूं तथा अन्य अनाज गांव से ही आ जाता था। चावल दाल साफ करने के बाद जो छोटे-छोटे टुकड़े निकलते उनको एक बड़े बर्तन में करके सीढ़ियों के नीचे की जगह में रखवा देती थी। फिर कभी उनकी बहू और कभी वे स्वयं ही, उसी में से रोज दो मुट्ठी चावल निकाल कर चिड़ियों के लिए छत पर डाल देती थी। एक दिन मधू ने जब रागिनी से सीढ़ी के नीचे रखे हुए उन गैलनों के बारे में पूछा तब रागिनी ने उसे सब कुछ बता दिया था।

इधर मधू के यहां रागिनी द्वारा दिया गया अनाज़ भी खत्म हो गया। बच्चे फिर रोने लगे।भूख की मजबूरी और वह भी अपने बच्चों की भूख इंसान को गलत कदम उठाने के लिए भी बाध्य कर सकती हैं।मधू ने भी आज वही किया। सीढ़ी के नीचे रखे हुए चावल दाल की किनकी में से थोड़ा सा निकाल ले आयी और उसी को पकाकर बच्चों के तथा अपने पेटपूजा की व्यवस्था की। किनकी चावल के बहुत छोटे टुकड़े होते हैं जिसे या तो पशु-पक्षियों को खिला दिया जाता है या उसे पिसवाकर आटा बनाकर कुछ खाने की चीजें जैसे फरा ,इडली डोसा आदि बनाने में प्रयोग किया जाता है।

किनकी को चावल के रूप में बनाना कठिन है और स्वाद भी नहीं आयेगा। परन्तु भूख तो बस भूख है वह स्वाद नहीं देखा करती।

दूसरे दिन रागिनी की बहू चिड़ियों को डालने के लिए किनकी निकालने चली तो उसे वह गैलन हल्का लगा। उसने तुरंत सास को यह जानकारी दी, "मम्मी किनकी वाला गैलन आज खाली लग रहा है। अभी तो उसे भरा था।"

"अरे बेटा उसमें से निकाल कर मैंने थोड़ा सा गाय को डाल दिया था।" रागिनी ने बहू को आश्वस्त किया।

रागिनी जानती थी कि उस गैलन से किनकी मधू ले जाती है । रागिनी दो चार दिन के बाद सबकी नजर बचाकर गैलन भर देती थी । यही नहीं अब चिड़ियों को दाना डालने का काम उसने अपने हाथ में ले लिया। अब वह उस किनकी में आधे से ज्यादा चावल मिला देती थी। दाल के टुकड़े में दाल मिलाकर रख देती थी। मधू जब दाल चावल के टुकड़े निकाल कर लातीं तो पति से कहती," इन लोगों को किनकी निकालना भी नहीं आता इसमें तो आधे से अधिक साबूत अनाज होता है।"

उसको यह भी समझ में नहीं आ रहा था कि रोज वह गैलन से दाल और चावल के टुकड़े निकालती है पर गैलन खाली क्यों नहीं हो रहा है।वह इसे ईश्वरीय लीला मानकर चल रही थी।

एक दिन रागिनी के बेटे को सीढ़ी के नीचे कुछ आवाज सुनाई दी। वह सीढ़ियों की ओर बढ़ा मगर मां रागिनी सामने आ गयी, "नहीं बेटा कोई जरूरत नहीं है वहां जाने की। मुझे सब पता है। सीढ़ियों के नीचे रखे गैलन की किनकी से ही चार लोगों को जिंदगी मिल रही है बेटा । और वह भी पूरे स्वाभिमान के साथ।"
बेटे को सब समझ में आ गया।उसे अपनी मां पर गर्व महसूस हो रहा था।

तभी लाकडाउन खुलने का एलान हुआ।रागिनी ने उन लोगों के घर जाने की व्यवस्था भी की । एक हजार रुपए किराया तथा रास्ते में खाने के लिए पूड़ी सब्जी दिया और उनको हंसी खुशी उनके घर भेज दिया। अपने घर पहुंचकर दोनों ने रागिनी को बहुत बहुत धन्यवाद दिया।वे लोग सच्चे मन से रागिनी को दुआ दे रहे थे। मधू भगवान को धन्यवाद दे रही थी।

****